दो चिट्ठियाँ

अँधेरी गली
अर्न्तभू - 03

श्रीमान और श्रीमती घुमन्तु जी,

हमारी बढ़ती समस्याओं के कारण हम यह पत्र आपको लिखने पर मजबूर हो गए हैं। आप लगातार फूलते जा रहे हैं। फूलेंगे क्यों नहीं? आप हमारे परिवारों का सफाया जो कर रहे हैं। हमारे बच्चे खेलते-कूदते हमें कितने प्यारे लगते हैं। कुछ समय पहले जन्मा चिटकू तो पहली बार ही घूमने बाहर निकला था। तुमने उस मासूम को ही चपेट में ले लिया। उसका दुनिया में नहीं रहने का शोक हमारे पूरे मुहल्ले को है। हम तुम्हारे खौफ से अभी भी अपने घरों में दुबके हैं। हम भूखे हैं, प्यासे हैं लेकिन घरों से नहीं निकल रहे हैं। पर घर से निकलना तो होगा ही। बाहर तुम्हारे हाथों मौत का डर। घर में भूख से मौत का डर। बताओ हम क्या करें? सोचो, रोज़ तुम्हारे बच्चे तुम्हारे ही सामने मारे जाएँ तो तुम्हें कैसा लगेगा? बस अब तुमसे कुछ भी कहने का जी नहीं कर रहा।

दुनिया में सपरिवार जीने के इच्छुक
नन्हे चौपाए

राज महल
भू-परी तह - 03
हमारे प्यारे स्वादिष्ट चौपायो,

तुम्हारा पत्र पढ़ा। पत्र इस बात का अहसास कराता है कि सचमुच तुम कितने डरे हुए हो। तुम्हें क्या लगता है हमारे बच्चों पर कोई खतरे नहीं हैं? उन पर ऐसी गाज नहीं गिरती जैसी गाज गिरने का रोना तुमने अपने पत्र में रोया है। प्रकृति का नियम ही ऐसा है तो हम क्या करें? तुम्हारे पत्र के हिसाब से तो हमें भूख से मर जाना चाहिए? दूध-दही के लुटेरों ने दूध-दही को हमारी पहुँच से दूर कर दिया है। सौ घर घूमने के बाद भी कहीं एक रोटी तक नसीब नहीं होती। ऐसे में हम कैसे ज़िन्दा रहें यह सोचा है कभी? अभी एक महीना भी नहीं हुआ इस दर्दनाक घटना को घटे। हम दोनों जने एक झरोखे में कुछ तलाश कर रहे थे। असल में वहाँ चिड़े-चिड़ी की चहचहाहट हमें सुनाई दी थी। पता है नीचे क्या हो रहा था? एक टेढ़ी पूँछ वाले जानवर ने हमारे बच्चे के चिथड़े-चिथड़े कर डाले। हम कितना पुकारते रहे, कितना चीखे चिल्लाए। पर क्या उसने हमारे मासूम को बख्शा? हम नहीं कहते कि तुम्हारा दुख गैर-वाजिब है लेकिन क्या करें यही दुनिया का दस्तूर है। हाथ को हाथ खा रहा है हमारे प्यारो ... हाथ को हाथ !

आखिर में एक बात और। पिछले दो दिनों से बुरा हाल है। अब तुम्हीं सपरिवार घर से बाहर निकलो तो कुछ बात बने?

एक स्वादिष्ट थाली के इन्तज़ार में
तुमसे कुछ बड़े चौपाए

तुमने अभी-अभी दो चिट्ठियाँ पढ़ीं। ये चिट्ठी किसने किसको लिखी होंगी? उनका आपस में क्या रिश्ता होगा? चिट्ठी लिखने वाले कहाँ रहते होंगे, शहर में, कस्बे में या गाँव में? चिट्ठी लिखने वाले क्या करते होंगे? ऐसे कई सवालों के जवाब इन चिट्ठियों को पढ़कर दिए जा सकते हैं।

इन दोनों चिट्ठियों को पढ़कर इनके लेखकों के बारे में तुम क्या-क्या अन्दाज़ लगा सकते हो?

अपने जवाब हमें 20 मई तक चकमक के पते पर भेज दो।

चुनिन्दा जवाबों को उपहार में मिलेंगी पाँच बहुत ही आकर्षक किताबें।

प्रस्तुति : दुर्गा प्रसाद यादव